24/11/16 (Eve)
Thursday

[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 8062 **GC** **Your Roll No................**
प्रश्न पत्र का क्रमांक **आपका अनुक्रमांक............**

Unique Paper Code : 62051312
यूनिक पेपर कोड

Name of the Paper : Hindi-A

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi A**
पाठ्यक्रम का नाम : **बी. ए. (प्रोग्राम) सी.बी.सी.एस.**

Semester / Annual : III
सेमेस्टर / वार्षिक : तीन

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75
समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. All questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (15)

(क) शीतकाल की रजनीं, मेघों से भरा आकाश, जिसमें बिजली की दौड़-धूप। मधूलिका का छाजन टपक रहा था; ओढ़ने की कमी थीं। वह ठिठुरकर एक कोने में बैठी थी। जीवन में सामंजस्य बनाए रखनेवाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परंतु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ बढती-घटती रहती है। आज बहुत दिनों से बीती हुई बात स्मरण हुई- "दो, नही-नहीं तीन वर्ष हुए होंगे, इसी मधूक के नीचे, प्रभात में-तरुण राजकुमार ने क्या कहा था?"

अथवा

गनी छड़ी के सहारे चलता हुआ किसी तरह मलबे के पास पहुँच गया। मलबे में अब मिट्टी-ही-मिट्टी थी जिसमें से जहाँ-तहाँ टूटी और जली हुई ईटें बाहर झाँक रही थी। लोहे और लकड़ी का समान उसमें से कब का निकाला जा चुका था। केवल एक जले हुए दरवाजे का चौखट

न जाने कैसे बचा रह गया था। पीछे की तरफ दो जली हुई अलमारियां थी, जिनकी कालिख पर अब सफेदी की हल्की-हल्की तह उभर आयी थीं। उस मलबे को पास से देखकर गनी ने कहा, "यह बाकी रह गया है, यह?"

(ख) मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढा था। उसने कहा था बाहर नहीं: भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो।

आत्म-तोषण की मत सोचो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा-प्रेम ही बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है।

अथवा

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वज़न की समस्या खड़ी हो गयी। साहब बोले- "भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। बीसों बार एक ही बात को बीज जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है, उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है, मगर.............."

2. नाटक का सामान्य परिचय दीजिए। (12)

अथवा

हिंदी व्यंग्य की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए।

3. 'नमक का दरोगा' कहानी में समाज की किस मूल समस्या को अभिव्यक्त किया गया है। (12)

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. 'उत्साह' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

'साहित्य जन समूह के हदय का विकास है' निबंध का सार लिखिए।

5. घीसा रेखा चित्र की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'भोला राम का जीव' मे निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए। (12)

1. प्रेचचन्द्र युगीन कहानी

2. भारतेन्दु युग के नाटक